Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 5

प्रीतेश जोशी

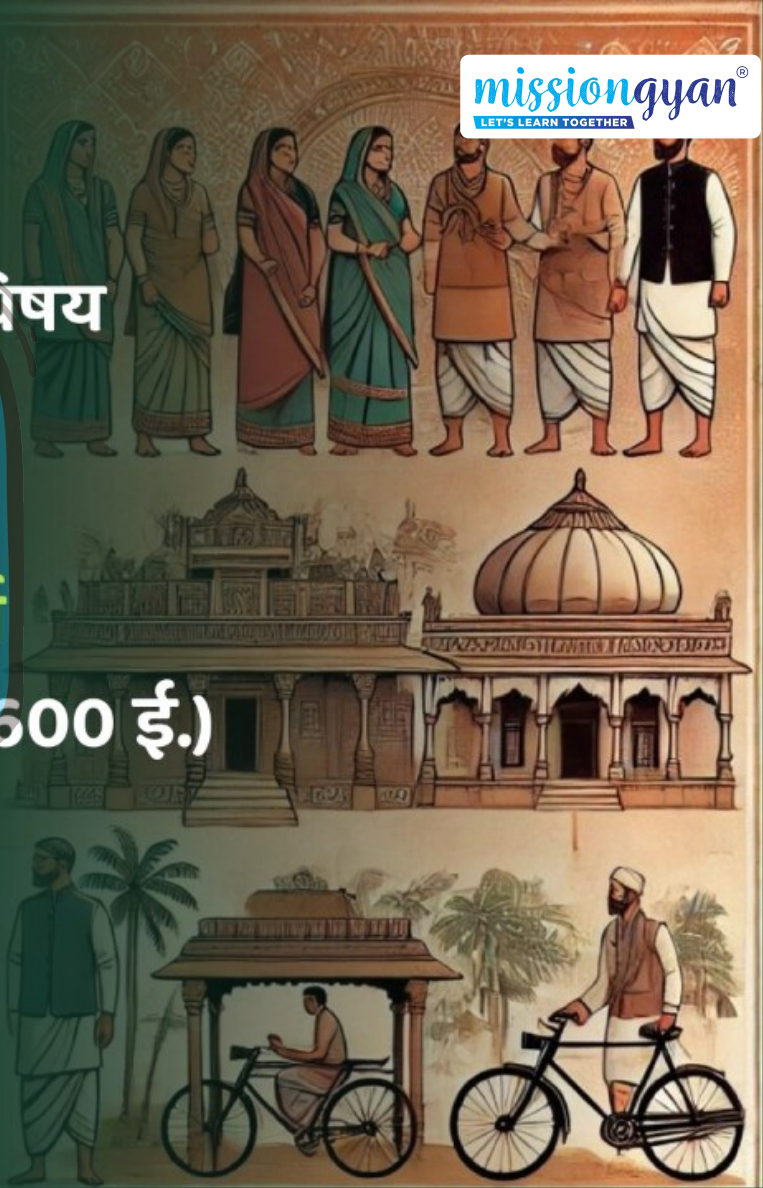

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भूमिका।

जन्म के परे



संसाधन और प्रतिष्ठा :-

- यदि हम आर्थिक संबंधों पर विचार करें तो देखेंगे कि दास, भूमिहीन खेतीहर मजदूर, शिकारी, मछुआरे, पशुपालक, किसान, ग्राम मुखिया, शिल्पकार, वणिक और राजा सभी का उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक-अभिनायक के रूप में उद्भव हुआ।
- उनके सामाजिक स्थान इस बात पर निर्भर करते थे कि आर्थिक संसाधनों पर उनका कितना नियंत्रण है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



संपत्ति पर स्त्री और पुरूष के भिन्न अधिकार :-

- महाभारत के एक महत्वपूर्ण प्रकरण पर विचार करते हैं.....
- कौरव और पांडव के बीच लंबे समय से चली आ रही प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप दुर्योधन ने युधिष्ठिर को द्यूत क्रीडा के लिए आमंत्रित किया।
- युधिष्ठिर अपने प्रतिद्वन्द्वी द्वारा धोखा दिये जाने के कारण इस द्यूत में स्वर्ण, हस्ति, रथ, दास, सेना, कोष, राज्य तथा अपनी प्रजा की संपत्ति, अनुजों और फिर स्वयं को भी दाँव पर लगा कर गँवा बैठे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इसके उपरांत उन्होंने पांडवों की सहपत्नी द्रोपदी को भी दाँव पर लगाया और उसे भी हार बैठे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

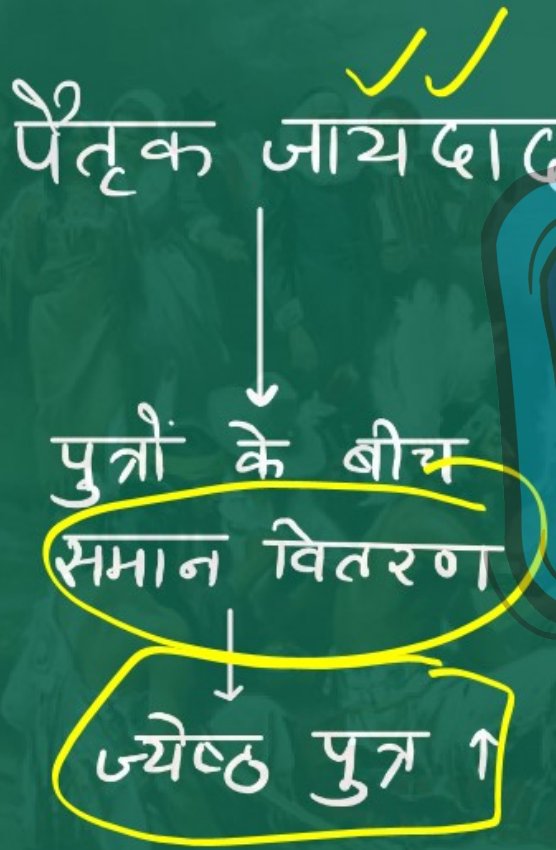

- संपत्ति के स्वामित्व के मुद्दे जो इन कहानियों से वर्णित है, धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों में भी उठाये गये हैं।
- मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायजाद का माता-पिता का मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए किंतु ज्येष्ठ पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था। स्त्रियां इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती थीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

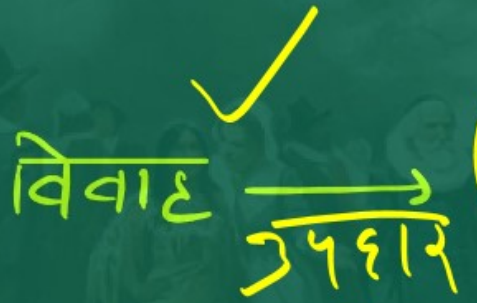

- किंतु विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था और इसे स्त्रीधन (स्त्री का धन) की संज्ञा दी जाती थी। इस संपत्ति को उसकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी और इस पर उसके पति का कोई अधिकार नहीं होता था।
- किंतु मनुस्मृति स्त्रियों को पति की आज्ञा के विरूद्ध पारिवारिक संपत्ति या स्वयं अपने बहुमूल्य धन के गुप्त संचय के विरूद्ध भी चेतावनी देती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

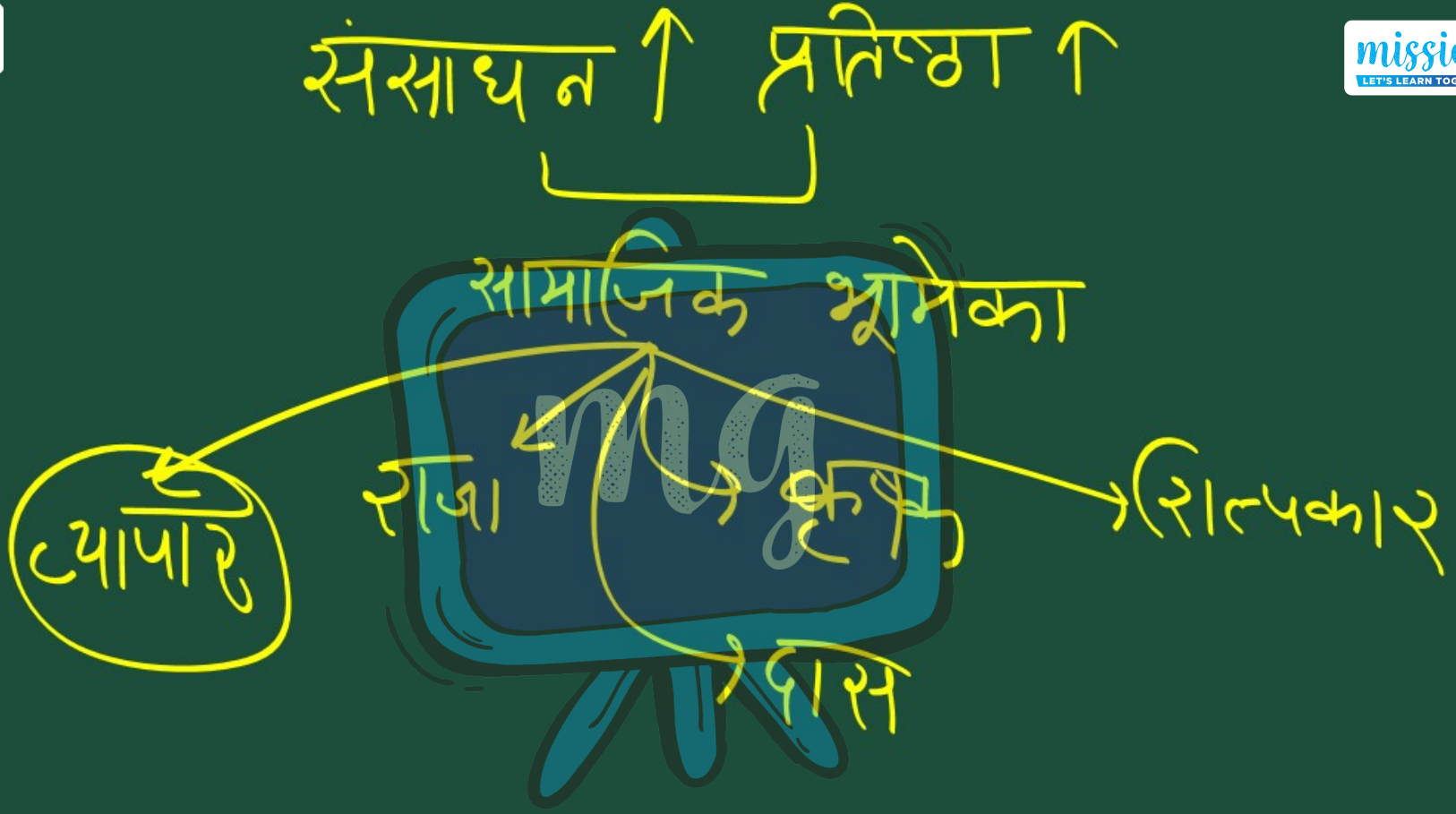

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

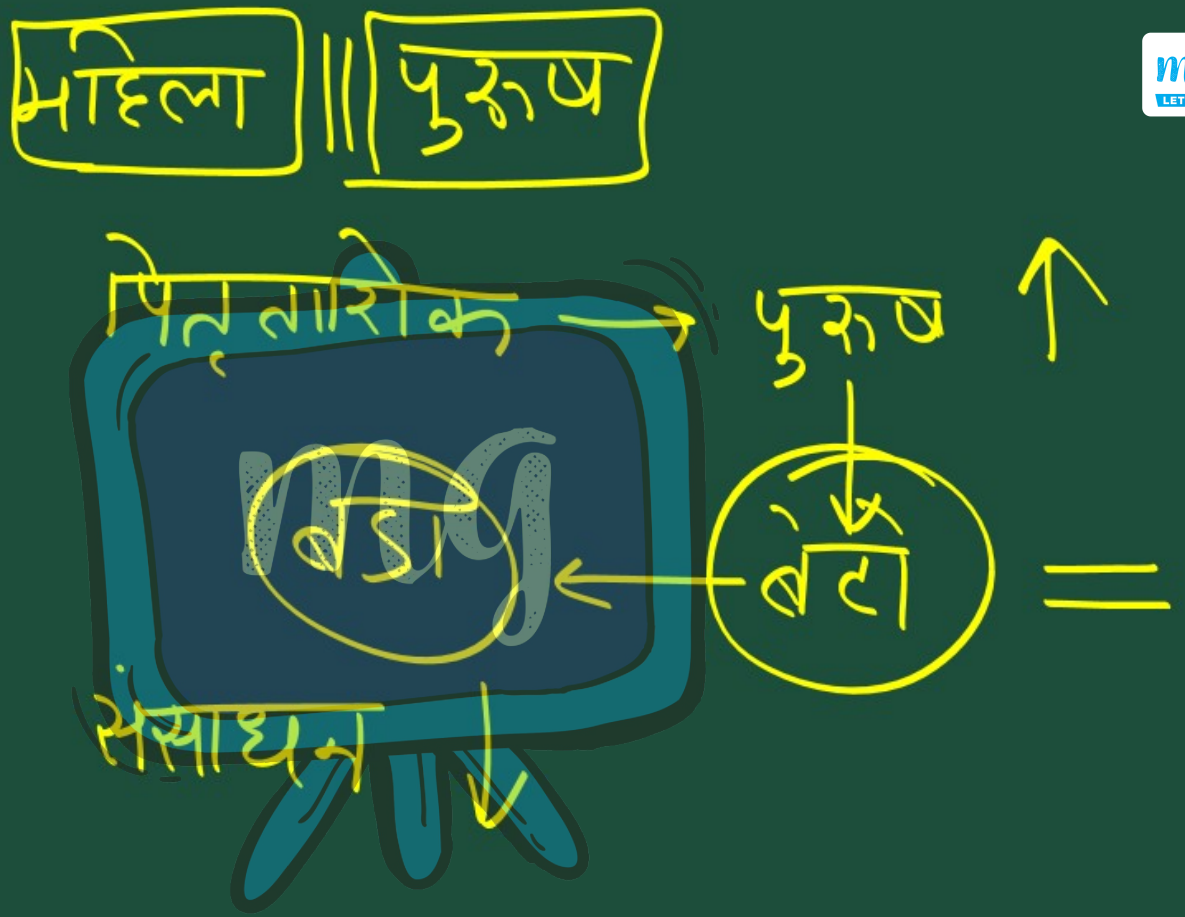

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- एक धनाढ्य वाकाटक-महिषी प्रभावती गुप्त के साथ-साथ अनेक अभिलेखीय व साहित्यिक-साक्ष्य इशारा करते हैं कि उच्च वर्ग की महिलाऐं तो संसाधनों पर अपनी पैंठ रखती थी जबकि सामान्यतः भूमि, पशु व धन पर पुरूषों का ही नियंत्रण था।
- इसलिए स्त्री और पुरूष के बीच सामाजिक हैसियत की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से ही ज्यादा प्रखर हुई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मनुस्मृति → मनु

धन साधन | ग्रहण

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- विरासत
- खोज
- खरीद
- विजित
- निवेश
- कार्य
- सज्जनों

पिता → पैतृक धन



- वैवाहिक अग्नि
- वधुगमन
- पिता
- माता
- भ्राता
- पति

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

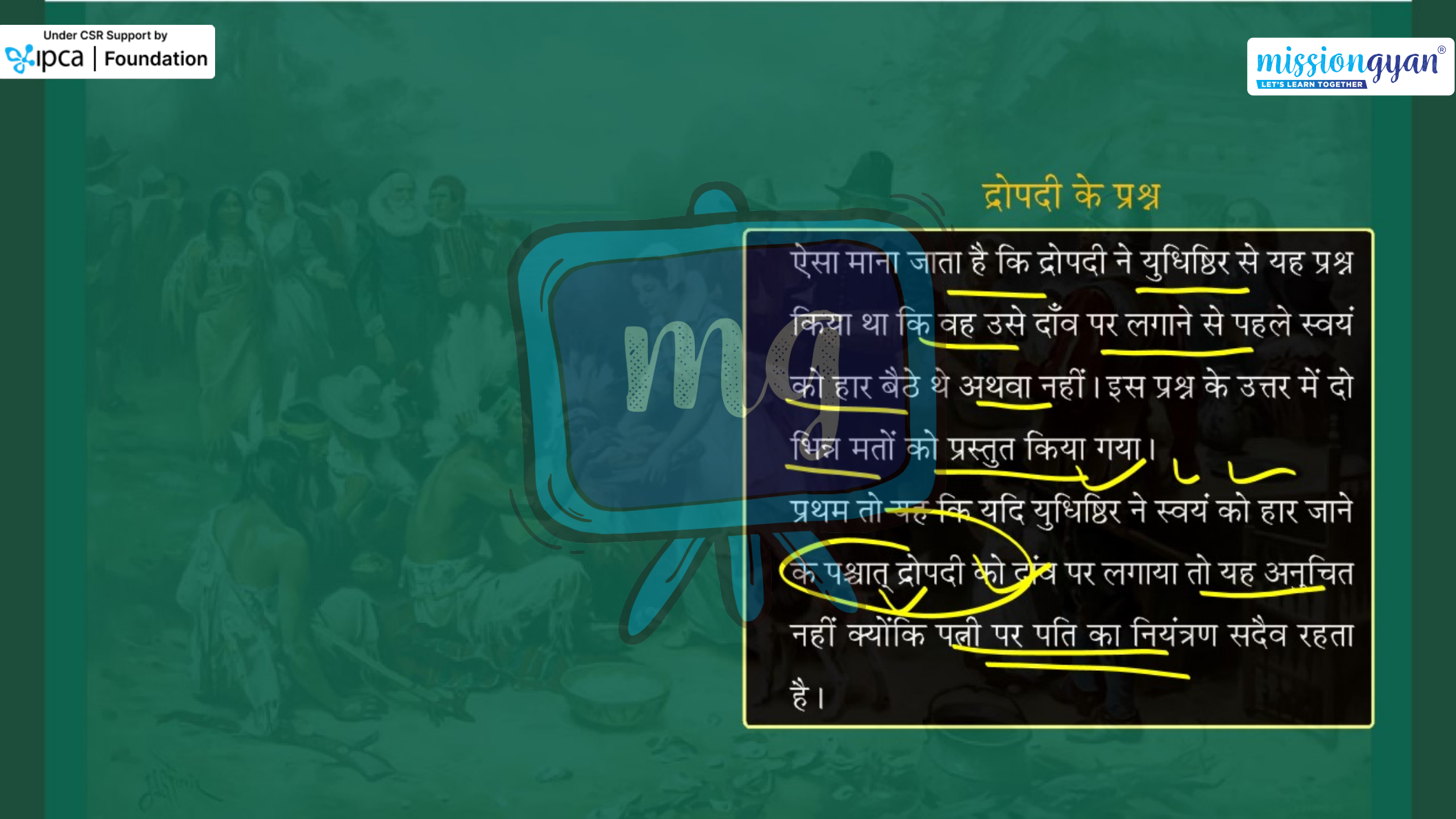

द्रोपदी के प्रश्न

ऐसा माना जाता है कि द्रोपदी ने युधिष्ठिर से यह प्रश्न किया था कि वह उसे दाँव पर लगाने से पहले स्वयं को हार बैठे थे अथवा नहीं। इस प्रश्न के उत्तर में दो भिन्न मतों को प्रस्तुत किया गया।

प्रथम तो यह कि यदि युधिष्ठिर ने स्वयं को हार जाने के पश्चात् द्रोपदी को दांव पर लगाया तो यह अनुचित नहीं क्योंकि पत्नी पर पति का नियंत्रण सदैव रहता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

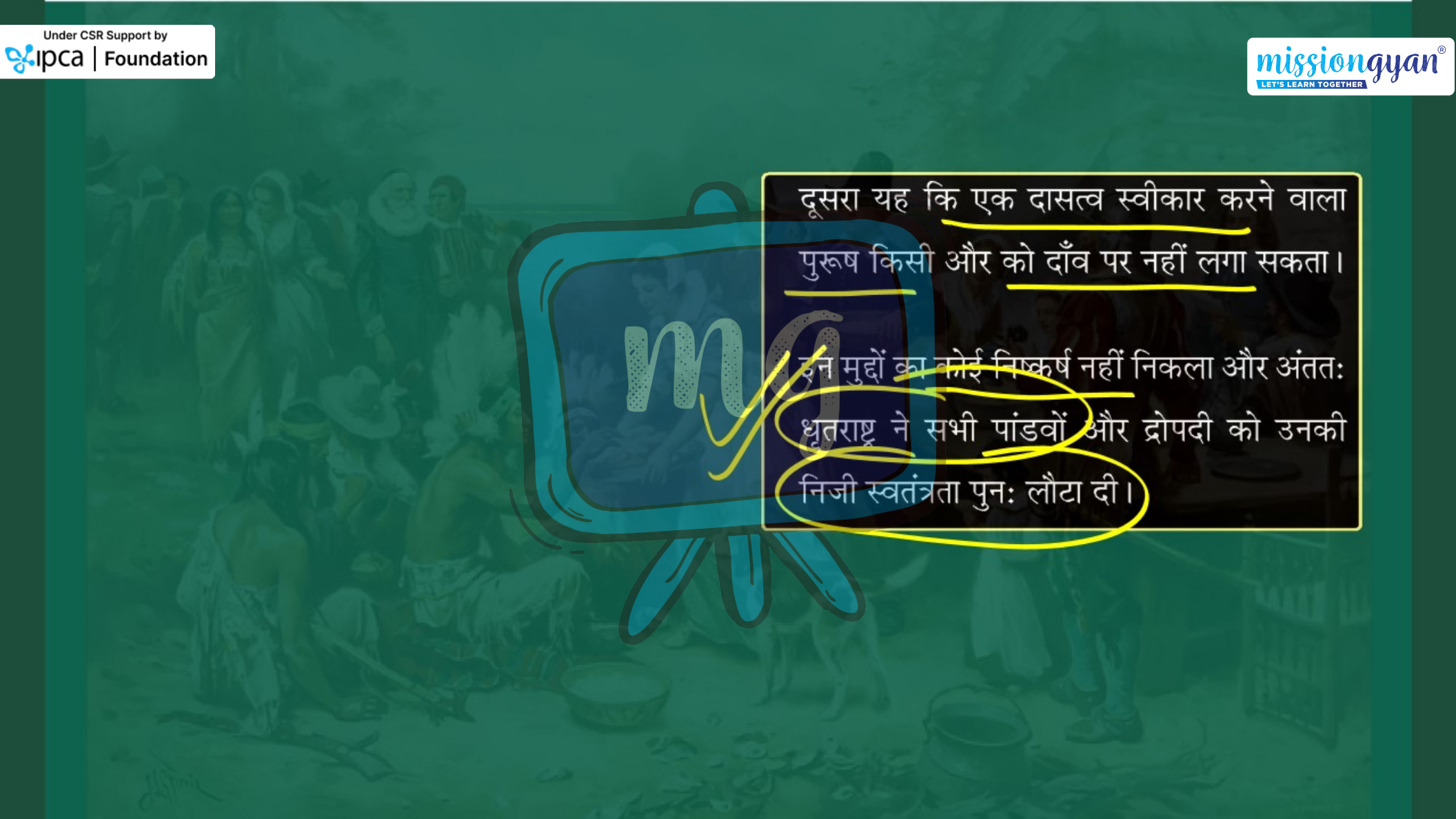

दूसरा यह कि एक दासत्व स्वीकार करने वाला पुरूष किसी और को दाँव पर नहीं लगा सकता।

इन मुद्दों का कोई निष्कर्ष नहीं निकला और अंततः धृतराष्ट्र ने सभी पांडवों और द्रोपदी को उनकी निजी स्वतंत्रता पुनः लौटा दी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्ण और संपत्ति के अधिकार :-

- ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार संपत्ति पर अधिकार का एक और आधार वर्ण था। (लैंगिक आधार के अतिरिक्त)
- शूद्रों के लिए एकमात्र 'जीविका' ऐसी सेवा थी जिसमें हमेशा उनकी इच्छा शामिल नहीं होती थी।
- हालांकि तीनों उच्च वर्णों के पुरूषों के लिए विभिन्न जीविकाओं की संभावना रहती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यदि इन सब विधानों को वास्तव में कार्यान्वित किया जाता है तो ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे धनी व्यक्ति होते।

यह कुछ हद तक वास्तविकता से मेल भी खाता है साहित्यिक परम्पराओं में पुरोहितों और राजाओं का वर्णन मिलता है जिसमें राजा अधिक धनी चित्रित होते थे। पुरोहित भी सामान्यतः धनी दर्शाये जाते हैं। हालांकि यदा-कदा निर्धन ब्राह्मण का भी चित्रण मिलता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

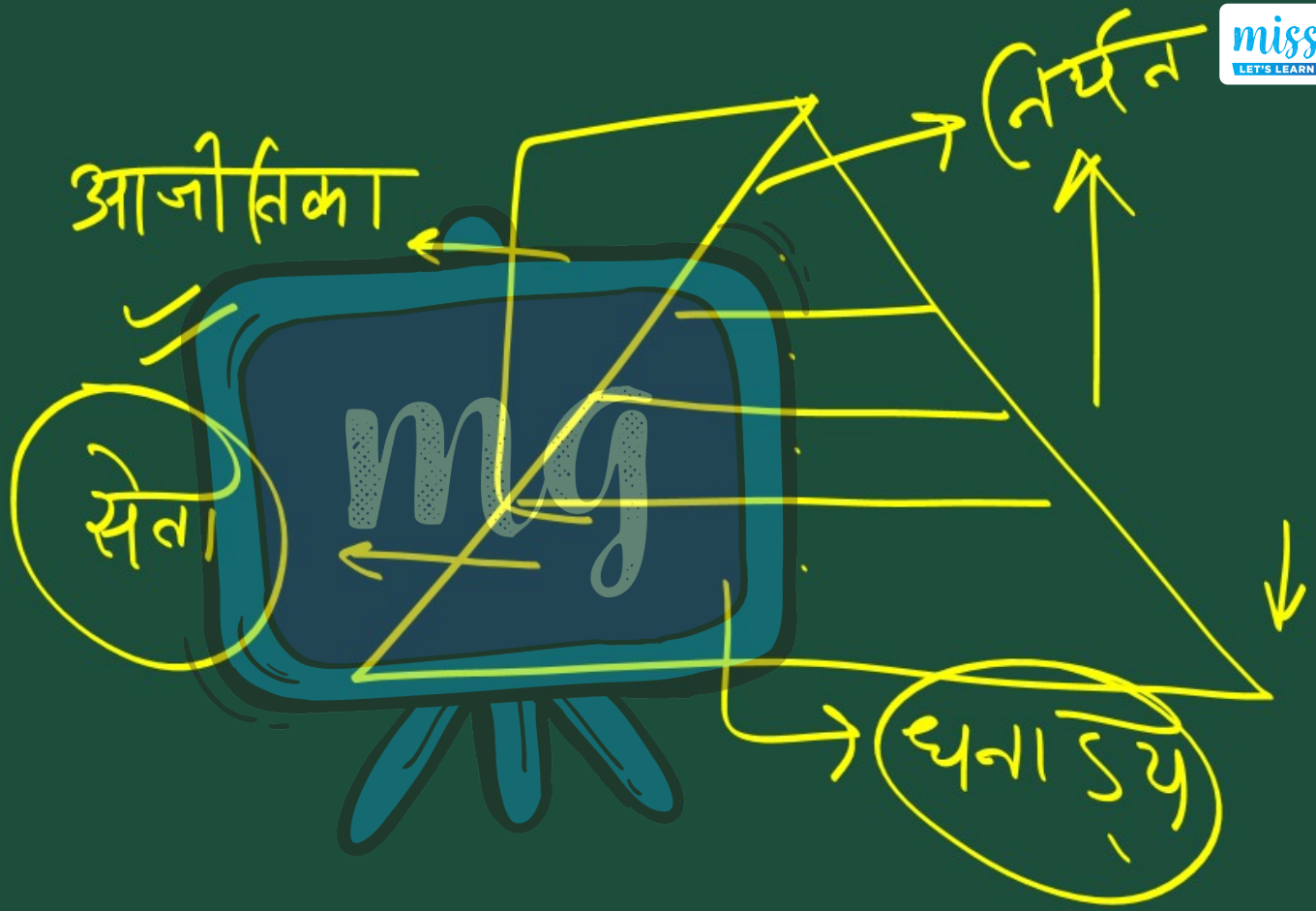

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

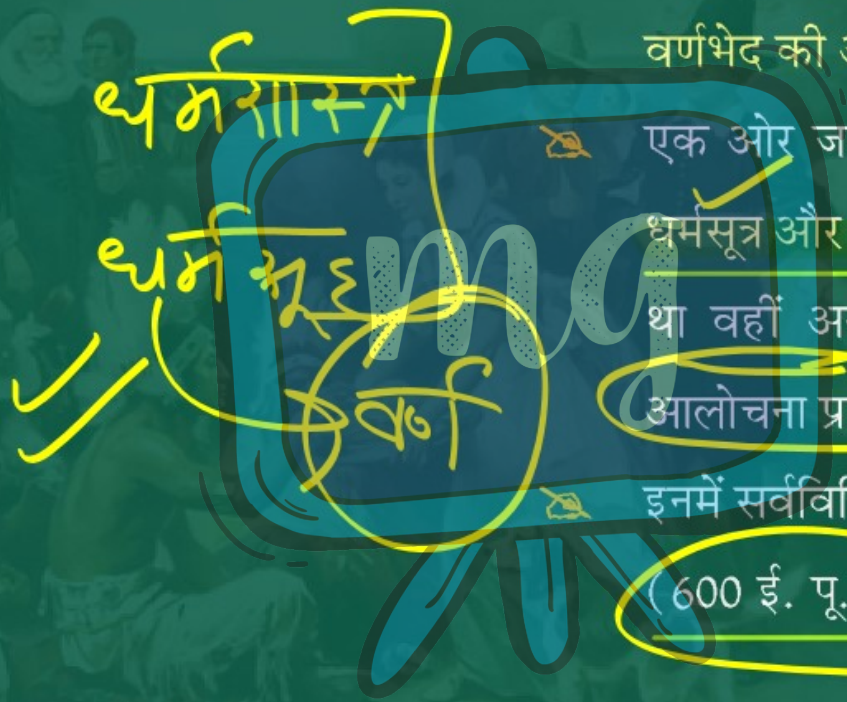

वर्णभेद की आलोचना –

- एक ओर जहां समाज के ब्राह्मणीय दृष्टिकोण को धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में संहिताबद्ध किया जा रहा था वहीं अन्य परम्पराओं ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना प्रस्तुत की।
- इनमें सर्वविदित आलोचनाऐं प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में (600 ई. पू. से) विकसित हुई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

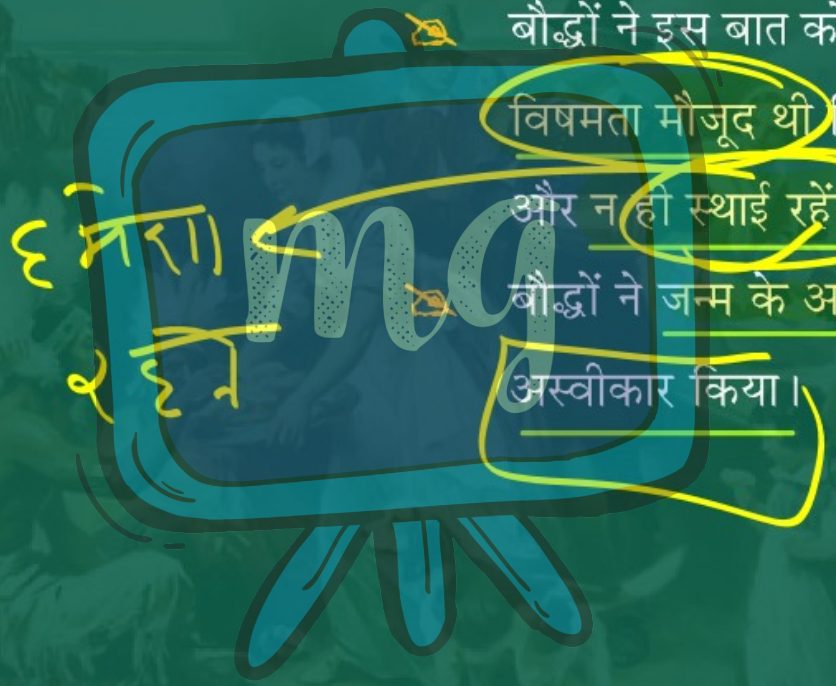

बौद्धों ने इस बात को अंगीकार किया कि समाज में विषमता मौजूद थी किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थाई रहेंगे।

बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

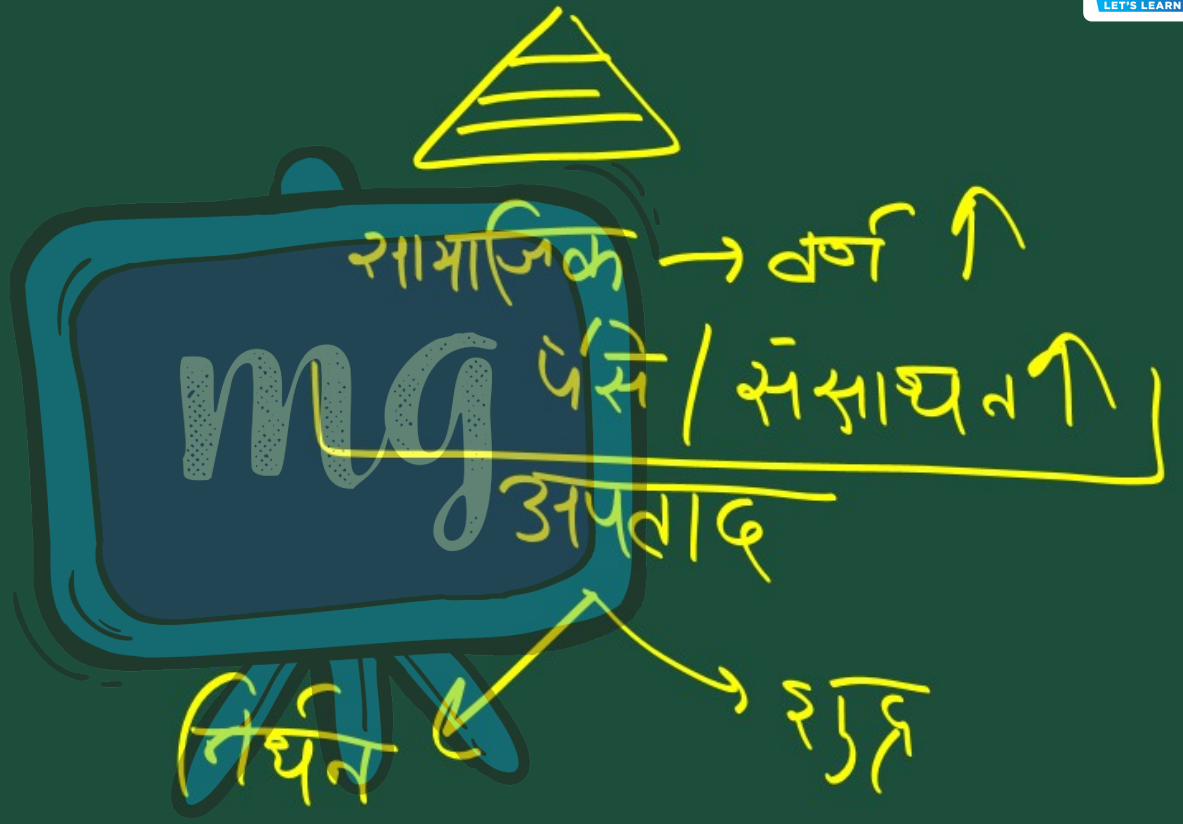

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

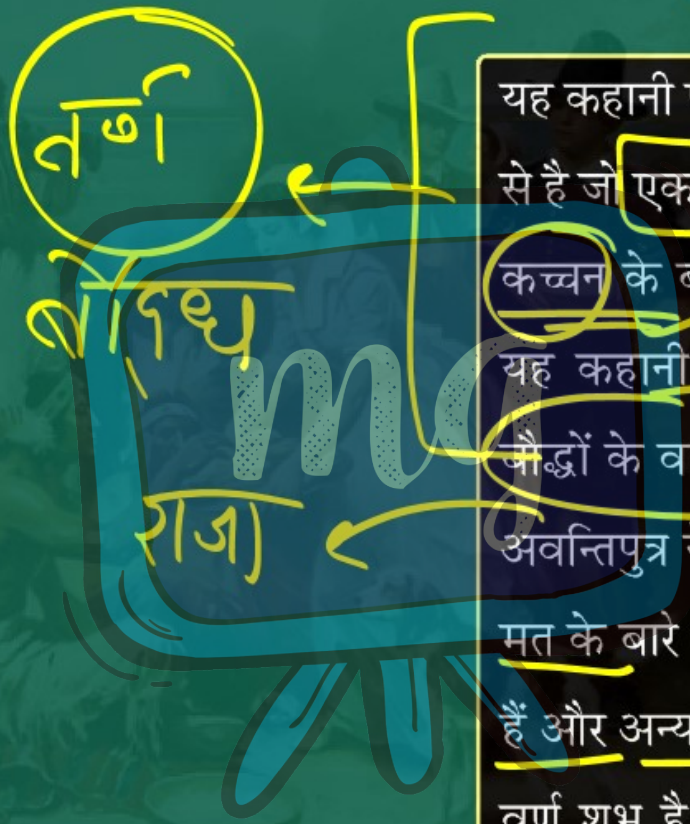

एक धनाढ्य शूद्र

यह कहानी पालि भाषा के बौद्ध ग्रंथ मज्झिमनिकाय से है जो एक राजा अवन्तिपुत्र और बुद्ध के अनुयायी कच्चन के बीच हुए संवाद का हिस्सा है। यद्यपि यह कहानी अक्षरशः सत्य नहीं थी तथापि यह बौद्धों के वर्ण संबंधी रवैये को दर्शाती है। अवन्तिपुत्र ने कच्चन से पूछा कि ब्राह्मणों के इस मत के बारे में उनकी क्या राय है, कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं और अन्य जातियां निम्न कोटि की हैं, ब्राह्मण का वर्ण शुभ्र है और अन्य जातियां काली हैं, केवल ब्राह्मण पवित्र हैं, अन्य नहीं, ब्राह्मण ब्रह्मा के पुत्र

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

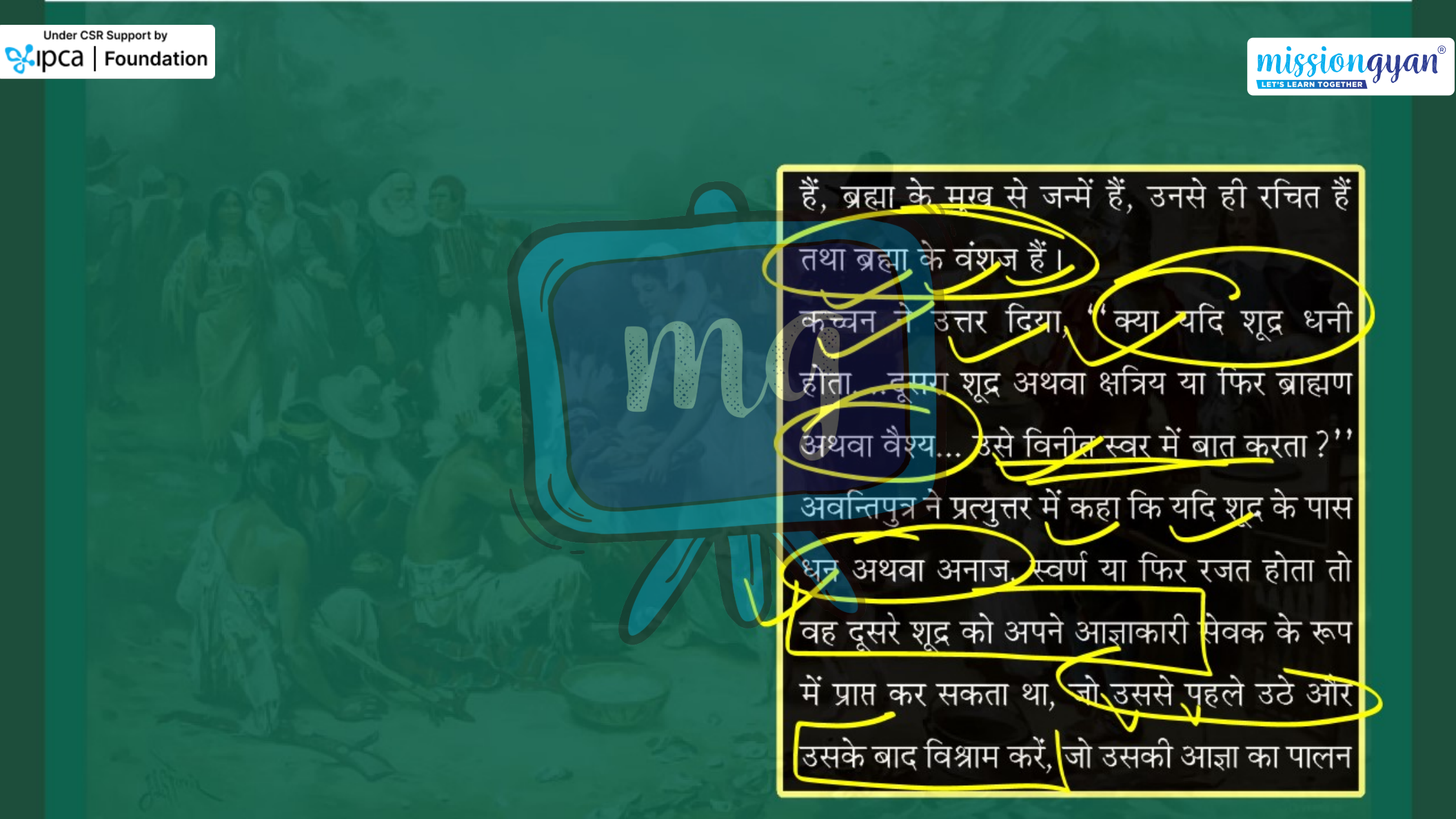

हैं, ब्रह्मा के मुख से जन्में हैं, उनसे ही रचित हैं तथा ब्रह्मा के वंशज हैं।

कच्चन ने उत्तर दिया, "क्या यदि शूद्र धनी होता... दूसरा शूद्र अथवा क्षत्रिय या फिर ब्राह्मण अथवा वैश्य... उसे विनीत स्वर में बात करता?"

अवन्तिपुत्र ने प्रत्युत्तर में कहा कि यदि शूद्र के पास धन अथवा अनाज, स्वर्ण या फिर रजत होता तो वह दूसरे शूद्र को अपने आज्ञाकारी सेवक के रूप में प्राप्त कर सकता था, जो उससे पहले उठे और उसके बाद विश्राम करें, जो उसकी आज्ञा का पालन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. क्या महाभारत में पुरुष व स्त्रीयों के संपत्ति के अधिकार समान थे?

Q. वर्ण भेद की आलोचना स्पष्ट किजिए?

करें, विनीत वचन बोले अथवा वह क्षत्रिय, ब्राह्मण या फिर वैश्य को भी आज्ञावाही सेवक बना सकता था।

कच्चन ने पूछा, "यदि ऐसा है तो क्या फिर चारों वर्ण एकदम समान नहीं है?"

अवन्तिपुर ने यह स्वीकार किया इस आधार पर चारों वर्णों में कोई भेद नहीं है।

जिसके पास संसाधन हैं वही प्रतिष्ठित है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

एक वैकल्पिक सामाजिक रूपरेखा : संपत्ति में भागीदारी

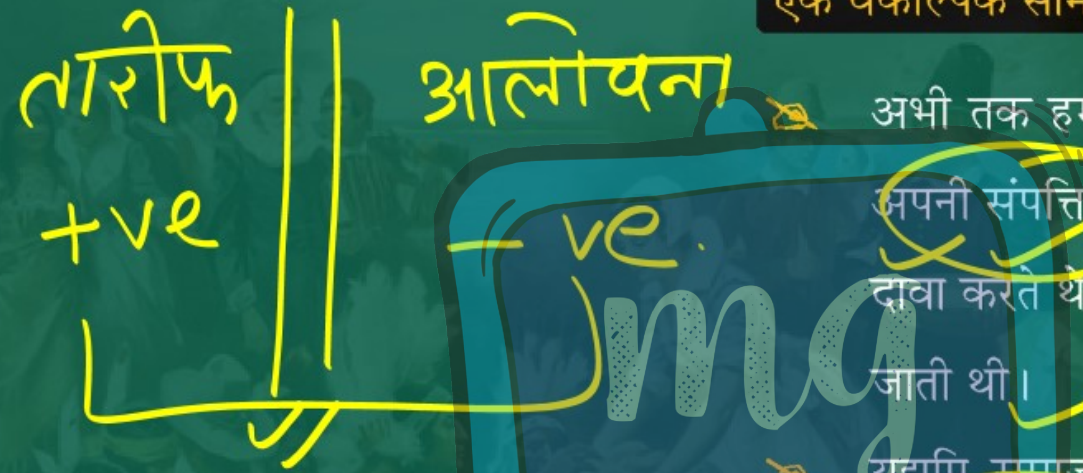

- अभी तक हमने वे परिस्थितियां देखी जहां लोग अपनी संपत्ति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा का दावा करते थे, या फिर उन्हें वह स्थिति प्रदान की जाती थी।
- यद्यपि समाज में अन्य संभावनाऐं भी थीं जहां दानशील आदमी का भी सम्मान किया जाता था तथा कृपण व्यक्ति या जो स्वयं अपने लिए संपत्ति संग्रह करता था, घृणा का पात्र होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

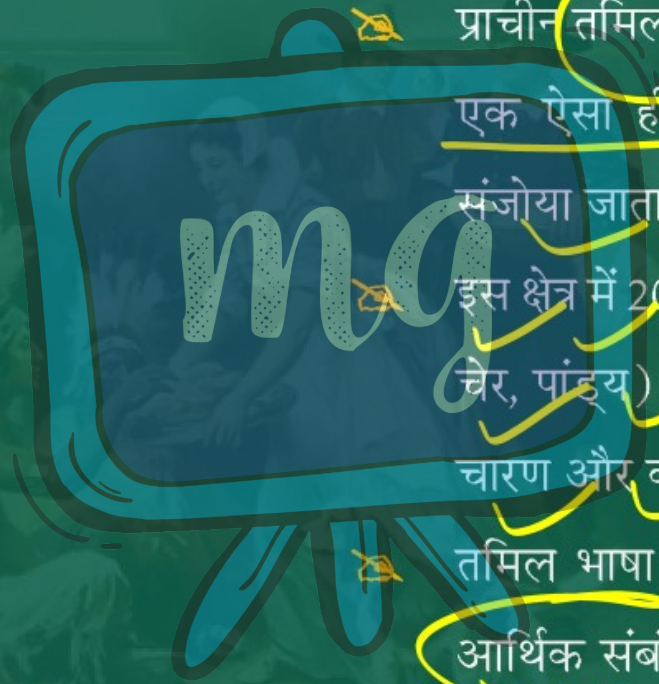

- प्राचीन तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल) एक ऐसा ही क्षेत्र था जहां उपरोक्त आदर्शों को संजोया जाता था।
- इस क्षेत्र में 2000 वर्ष पहले अनेक सरदारियां (चोल, चेर, पांड्य) थीं। ये सरदार अपनी प्रशंसा गाने वाले चारण और कवियों के आश्रयदाता होते थे।
- तमिल भाषा के संगम साहित्य में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का अच्छा चित्रण है जो इस ओर इंगित करता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

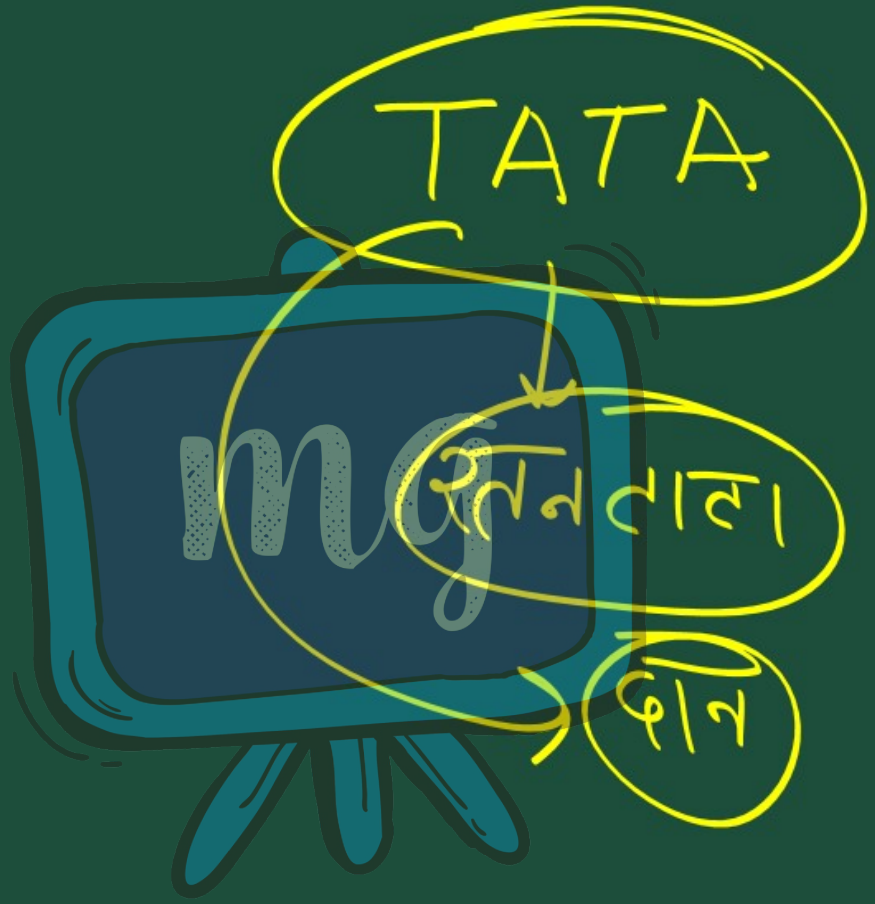

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

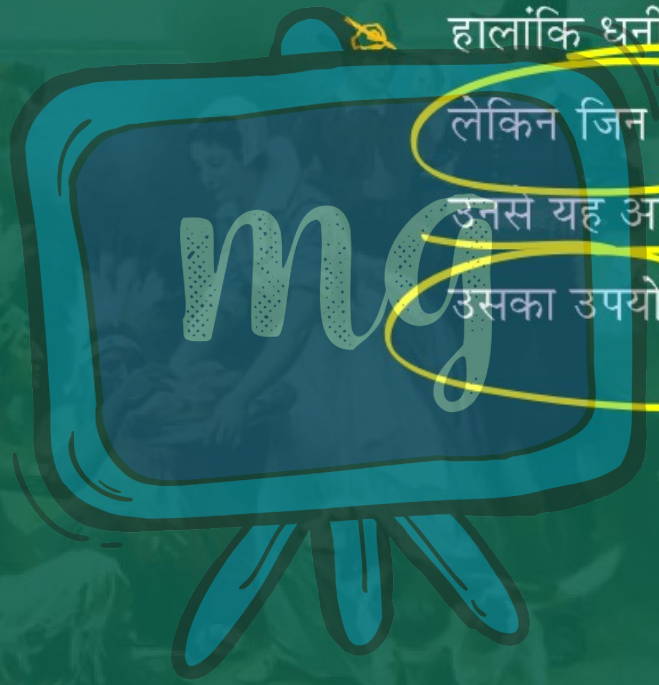

हालांकि धनी और निर्धन के बीच विषमताएं थीं
लेकिन जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण था
उनसे यह अपेक्षा की जाती थी वे मिल-बाँट कर
उसका उपयोग करें।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

